विचार बिन्दु

पुरुष का नारी के समान कोई बंधु नहीं। –महाभारत

मजबूत अर्थव्यवस्था से स्त्रियों की कार्यबल में भागीदारी नहीं बढ़ती

अर्थशास्त्र में 2023 का नोबेल पुरस्कार हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर क्लाउडिया गोल्डिन को श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी पर उनके काम के लिए दिया गया है। गोल्डिन अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार जीतने वाली तीसरी महिला हैं। यह पुरस्कार अब तक 90 पुरुषों ने पाया है। इस पुरुस्कार के 54 साल के इतिहास में वह गोल्डिन के अलावा केवल दो अन्य महिलाओं को मिला है – ब्लूमिंगटन की इंडियाना यूनिवर्सिटी की एलिनोर ओस्ट्रोम (2009) और मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान की एस्थर डुफ्लो (2019 में) को। गोल्डिन के अधिकांश शोध में इतिहास की नजर से वर्तमान को देखने की कोशिश की गई है। उनकी नवीनतम किताब 'करियर एंड फैमिली: वीमेन्स सेंचुरी–लॉन्ग जर्नी टुवर्ड्स इक्विटी' इसी पर है। आज की अर्थव्यवस्था में क्या हो रहा है, इसकी जांच करने के साथ यह भी जानना जरूरी है कि अतीत हमारे वर्तमान को आकार देने में किस प्रकार भूमिका निभाता है। जब हम चाहते हैं कि महिलाएं घरों से निकल कर आर्थिक बाजार में प्रविष्ट हो तब यह सब जानना महत्वपूर्ण हो जाता है। गोल्डिन का काम लंबे समय से चली आ रही धारणाओं को अमान्य करता है कि एक मजबूत अर्थव्यवस्था और तकनीकी प्रगति महिलाओं को कार्यबल में खींचने के लिए पर्याप्त होगी। उनके शोध में पाया गया कि 1790 के दशक में, जब अमेरिकी अर्थव्यवस्था का अधिकांश हिस्सा कृषि पर आधारित था, विवाहित महिलाओं की एक बड़ी हिस्सेदारी – लगभग 60 प्रतिशत – कार्यबल में थी। लेकिन 1800 के दशक में औद्योगीकरण के बढ़ने के साथ महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी में नाटकीय रूप से गिरावट आई, क्योंकि उनके लिए घरेलू जिम्मेदारियों के साथ उद्योगों, कारखानों में बाहरी काम करना मुश्किल हो गया। हालांकि,1900 की शुरुआत तक, महिलाएं सेवा–क्षेत्र के काम में बदलाव और अधिक शैक्षिक अवसरों के चलते वापस लौटने लगीं। लेकिन बच्चों की सुलभ और किफायती देखभाल की कमी अब भी प्रमुख बाधा बनी हुई है। उनसे पहले के पुरुष अर्थशास्त्रियों ने भी ऐसे अध्ययन किये हैं मगर उन्होंने शायद ही कभी सोचा कि घर में खाना कौन पकाता है, कपडे कौन धोता है, और बच्चों को कैसे पाला–पोसा जाता है। गोल्डिन के सबसे उल्लेखनीय निष्कर्षों में से एक था 1960 में जन्म नियंत्रण गोलीतक उनकी पहुंच जिसने महिलाओं के बीच कॉलेज नामांकन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गोल्डिन का शोध पुरुष और स्त्री के बीच लगातार बने रहे मजदूरी और वेतन में अंतर के कारणों का भी पता लगाता है। अतीत में हालांकि यह अंतर शिक्षा के स्तर और कैरियर विकल्पों के चयन के कारण था, लेकिन उनके शोध ने उजागर किया कि एक सी नौकरियों में भी पुरुषों और महिलाओं के बीच वेतन असमानताएं बनी हुई हैं। उन्होंने पाया कि पहले बच्चे के जन्म के बाद महिलाओं की आय पर तत्काल प्रभाव पडता है क्योंकि उन्हें बच्चों की देखभाल पर अधिक समय देना पडता है और उन्हें अपने काम के घंटे कम कर देने पडते हैं या नौकरी में अपनी तरक्की के अवसरों को छोड़ देना पड़ता है। क्लाउडिया का काम पहेली के टुकडों की तरह है, जिन्हें जब सही तरीके से मिला कर रखा जाता है तब श्रम बाज़ार में और घर पर महिलाओं की भूमिका को समझने में हमारी मदद मिलती है।

किन्तु बहुतों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार उन पुरस्कारों में से एक नहीं है जिनकी अल्फ्रेड नोबेल ने अपनी वसीयत में अनुसंशा की थी। प्रति वर्ष नोबेल पुरस्कारों के साथ ही घोषित होने वाला तथा दिया जाने वाला यह पुरस्कार 1895 में अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत द्वारा स्थापित किए गए नोबेल पुरस्कारों में से एक नहीं है। मगर इसे आमतौर पर अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार के रूप ही में जाना जाता है। आर्थिक विज्ञान में पुरस्कार की नामांकन प्रक्रिया, चयन मानदंड और पुरस्कार प्रस्तुति मूल नोबेल पुरस्कारों के समान तरीके से ही की जाती है। अर्थशास्त्र में नोबेल मेमोरियल पुरस्कार के विजेताओं की तरह इसकी विजेता को चुना जाता है, नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के साथ ही उसका नाम भी घोषित किया जाता है, और यह पुरस्कार नोबेल पुरस्कार समारोह में ही प्रस्तुत भी किया जाता है। मगर वास्तव में यह मूल नोबेल पुरस्कार नहीं है। यह पुरस्कार बहुत बाद में स्वीडन की केंद्रीय बैंक, 'स्वेरिग्स रिक्सबैंक' ने अपनी 300वीं वर्षगांठ पर 1968 में स्थापित किया था। इसी बैंक के नाम पर यह पुरस्कार दिया जाता है। इस पुरस्कार की परिभाषा को लेकर भी विद्वानों में द्वन्द्व चलता रहता है। फरवरी 1995 में, जॉन फोर्ब्स नैश को अर्थशास्त्र में 1994 का पुरस्कार देने से संबंधित चयन समिति के भीतर सामने आई कटुता के बाद, इस पुरस्कार को सामाजिक विज्ञान में पुरस्कार के रूप में फिर से परिभाषित किया गया था। इसे राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विषयों में शोधकर्ताओं के लिए भी उपलब्ध कराया गया। यह जानना दिलचस्प होगा कि 1978 में, हर्बर्ट ए. साइमन, जिनकी पीएचडी राजनीति विज्ञान में थी तथा प्रिंसटन विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान और सार्वजनिक मामलों के प्रोफेसर डैनियल कन्नमैन अर्थशास्त्र का पुरस्कार जीतने वाले पहले गैर–अर्थशास्त्री बने। इसके लिए अर्थशास्त्र के पुरस्कार की चयन समिति में दो गैर–अर्थशास्त्रियों को भी शामिल करने के लिए उसकी संरचना भी बदली गई। इस समिति के सदस्यों में हालांकि अब भी अर्थशास्त्रियों का ही वर्चस्व है, क्योंकि सचिव सहित छह सदस्यों में से पांच अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं और केवल एक वित्त के प्रोफेसर हैं। इनके अलावा सहवृत पांच सदस्यों में भी दो अर्थशास्त्र तथा आर्थिक इतिहास के है। अन्य तीन सांख्यिकी और समाजशास्त्र विषयों के हैं। कुछ आलोचकों का तर्क है कि अर्थशास्त्र में पुरस्कार को प्रतिष्ठा उसके नोबेल पुरस्कारों के साथ जुड़ाव से मिलती है। यह एक ऐसा संबंध है जो अक्सर विवाद का स्त्रोत रहा है। लुडविग नोबेल के परपोते स्वीडिश मानवाधिकार के पैरोकार पीटर नोबेल, नोबेल पुरस्कार देने वाली संस्था पर अपने परिवार के नाम का दुरुपयोग करने का आरोप लगाते हैं। वे कहते हैं कि नोबेल परिवार के किसी भी सदस्य का अर्थशास्त्र में पुरस्कार स्थापित करने का कभी इरादा नहीं रहा। उनका दावा है कि नोबेल ने तो ऐसे लोगों का तिरस्कार किया था जो समाज की भलाई की तुलना में मुनाफे को तरजीह देते थे। वे कहते हैं कि "ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो यह दर्शाता हो कि नोबेल ऐसा पुरस्कार स्थापित करना चाहते थे।" और यह कि नोबेल पुरस्कारों के साथ जुड़ाव "अर्थशास्त्रियों द्वारा अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए किया गया है। यह पीआर के जरिए किये गये तख्तापलट जैसा है।" स्वीडन के पूर्व वित्त मंत्री, केजेल–ओलोफ फेल्ड, और स्वीडिश पूर्व वाणिज्य मंत्री, गुन्नार मायर्डल, दोनों चाहते थे कि अर्थशास्त्र का यह पुरस्कार समाप्त कर दिया जाए।

> **1900 की शुरुआत तक, महिलाएं सेवा-क्षेत्र के काम में बदलाव और अधिक शैक्षिक अवसरों के चलते वापस लौटने लगीं। लेकिन बच्चों की सुलभ और किफायती देखभाल की कमी अब भी प्रमुख बाधा बनी हुई है। उनसे पहले के पुरुष अर्थशास्त्रियों ने भी ऐसे अध्ययन किये हैं मगर उन्होंने शायद ही कभी सोचा कि घर में खाना कौन पकाता है, कपड़े कौन धोता है, और बच्चों को कैसे पाला-पोसा जाता है।**

नोबेल पुरस्कारों के लिए नियम है कि तीन से अधिक लोग एक पुरस्कार साझा नहीं कर सकते। इसने भी विवादों को जन्म दिया है। विज्ञान के उन क्षेत्रों में जहां बहुत अधिक सहयोग की आवश्यकता होती है वहां ऐसे में किसी का छूट जाना असामान्य बात नहीं है। इस नियम के कारण कई वैज्ञानिक छूट जाते हैं। ऐसे भी उदाहरण हैं कि उसके वास्तविक हक़दार, जैसे क्वांटम एलेक्ट्रोडायनेमिक्स के क्षेत्र में फ्रीमन डाइसन पिछड़ जाते हैं। एक अन्य उदाहरण है भौतिकी की शोधकर्ता जोसेलिन बेल का जिन्होंने 1967 में अपने आंकड़ों में एक अजीब पैटर्न की खोज की, जो पल्सर स्टार की पहली खोज थी। लेकिन उन्हें इसके लिए कभी नोबेल नहीं मिला। इसके बजाय, 1974 में उनके सलाहकार एंटनी हेविश को "पल्सर की खोज में उनकी निर्णायक भूमिका" के लिए भौतिकी में नोबेल पुरस्कार दे दिया गया। उन्होंने साथी खगोलशास्त्री मार्टिन राइल के साथ पुरस्कार साझा किया। शांति पुरस्कार को लेकर भी लगभग हमेशा विवाद होता रहा है और उसे पूरी तरह राजनीतिक ही माना जाता रहा है। राजनीति के चलते ही महात्मा गांधी को पुरस्कार नहीं दिया गया। कुछ राजनेताओं को शांति स्थापना के कार्यों के लिए पुरस्कार दिया गया, लेकिन बाद में वे फिर हिंसक संघर्ष में संलग्न हो गये। नोबेल पुरस्कार नियमों के अनुसार दिया हुआ पुरस्कार वापस भी नहीं लिया जा सकता है। अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत के अनुसार शांति का पुरस्कार उस व्यक्ति को जाना चाहिए जिसने "राष्ट्रों के बीच सहयोग को बढ़ाने, स्थायी सेनाओं को खत्म करने या उनमें कमी करने और शांति स्थापना के लिए सर्वश्रेष्ठ काम किया है।" इसीलिए इसे शांति का पुरस्कार कहा जाता है। यह सवाल अब पूछा जाने लगा है कि क्या प्रति वर्ष नोबेल पुरस्कार इन मानदंडों के आधार पर दिए जाते हैं? दुनिया के इस सबसे प्रतिष्ठित सम्मान की घोषणा अधिकतर सबको आश्चर्य में डाल देती है। किन्तु जो लोग इस पर बारीकी से निगाह रखते हैं उनका कहना है कि विजेता के नाम का अनुमान लगाने का सबसे अच्छा तरीका तात्कालिक वैश्विक मुद्दों को देखना होता है। शांति पुरस्कार विजेता का चयन एक पांच सदस्यीय समिति करती है। समिति का पूरा विचार–विमर्श हमेशा के लिए गुप्त रहता है। इसमें हुई चर्चा के कोई मिनट्स नहीं रखे जाते हैं। लेकिन नामांकित व्यक्तियों की पूरी सूची सहित अन्य दस्तावेजों को 50 वर्षों तक सार्वजनिक न किए जाने का प्रावधान होने के करण वे नॉर्वेजियन नोबेल संस्थान में कई तालों से सुरक्षित दरवाजे के पीछे रखे जाते हैं। एक तिजोरी के अंदर, दस्तावेज़ों की फ़ाइलें पंक्तिबद्ध रखी जाती हैं। इसलिए इसी बात से संतोष करना होता है कि नोबेल पुरस्कारों के लिए चयन इंसान करते हैं जिनमें कमजोरियां भी होतीं हैं।

–अतिथि संपादकीय,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

जनसंख्या नियंत्रण : एक दोधारी तलवार

अविनाश जोशी

भारत में बढ़ती आबादी नासूर का रूप लेती जा रही है। हमारी विकास की गति एवम नई विकास योजनाओं पर भी बढ़ती आबादी का प्रभाव व्यापक तौर पे देखा जा सकता है। जनसंख्या को नियंत्रित करने और व्यवस्थित करने के लिए कई तरीकों का संबंध होता है, जैसे कि गर्भनिरोध, शिक्षा, और साथ ही साथ जनस्वास्थ्य सेवाएं। इसका मुख्य उद्देश्य जनसंख्या की बढ़ोतरी को नियंत्रित करना होता है ताकि समाज और संसाधनों का सही रूप से प्रबंधन किया जा सके। यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है।

आज विश्व की जनसंख्या सात अरब से ज्यादा है। अकेले भारत की जनसंख्या सवा अरब से अधिक है। भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। आजादी के समय भारत की जनसंख्या तैंतीस करोड़ थी, जो आज चार गुना तक बढ़ गई है। परिवार नियोजन के कमजोर तरीकों, अशिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अभाव, अंधविश्वास और विकासात्मक असंतुलन के चलते आबादी तेजी से बढ़ी है। संभावना है कि 2050 तक देश की जनसंख्या 1.6 अरब हो जाएगी। फिलहाल भारत की जनसंख्या विश्व–जनसंख्या का करीब सत्रह फीसदी है। भूभाग के लिहाज के हमारे पास विश्व की ढाई फीसदी जमीन है। चार फीसदी जल संसाधन है। जबकि विश्व में बीमारियों का जितना बोझ है, उसका बीस फीसदी अकेले भारत पर है। विश्व की आबादी में हर साल आठ करोड़ लोगों की वृद्धि हो रही है और इसका दबाव प्राकृतिक संसाधनों पर स्पष्ट रूप से पड़ रहा है। इतना ही नहीं, विस्थापन और रोजगार के लिए पलायन भी विश्व के समक्ष एक बड़ी समस्या के रूप में उभर रहा है। बढ़ती आबादी के चलते बहुत–से लोग बुनियादी सुख–सुविधा के लिए दूसरे देशों में पनाह लेने को मजबूर हैं। अधिक जनसंख्या के कारण, आवास और औद्योगिकीकरण की आवश्यकता बढ़ सकती है, जिससे वातावरण और प्रदूषण समस्याएं बढ़ सकती हैं।

उच्च जन्म–दर और बेहतर सफाई व स्वास्थ्य व्यवस्था के चलते घट रही मृत्यु–दर उच्च जनसंख्या वृद्धि दर की मुख्य वजहें हैं। जनसंख्या वृद्धि के मुख्य कारणों में जन्म–दर में वृद्धि तथा मृत्यु–दर में कमी, निर्धनता, संयुक्त परिवार, बाल विवाह, कृषि पर निर्भरता, प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि, धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वास, शिक्षा का अभाव प्रमुख हैं। हमारे देश में निर्धनता, अंधविश्वास, अशिक्षा, धार्मिक विश्वास, भ्रामक धारणाएं और स्वास्थ्य के प्रति अवैज्ञानिक दृष्टिकोण जनसंख्या वृद्धि के कारण हैं। इसके चलते भारतीय लोग संतानोत्पत्ति को ईश्वरीय वरदान समझते हैं और कृत्रिम उपायों से गर्भ निरोध उनकी दृष्टि में पाप है। हमारी आबादी में अब भी हर दिन पचास हजार की वृद्धि हो रही है। जनसंख्या वृद्धि के विश्लेषण के आधार पे इतनी बड़ी जनसंख्या को भोजन मुहैया कराने के लिए यह आवश्यक है कि हमारा खाद्यान्न उत्पादन प्रतिवर्ष चौवन लाख टन से बढ़े जबकि वह औसतन केवल चालीस लाख टन प्रतिवर्ष की दर से ही बढ़ पाता है।

जनसंख्या वृद्धि के दो मूल कारण अशिक्षा व गरीबी हैं। लगातार बढ़ती आबादी के चलते बड़े पैमाने पर बेरोजगारी तो पैदा हो ही रही है, कई तरह की अन्य आर्थिक और सामाजिक समस्याएं भी पैदा हो रही हैं। भारत के सामने अनेक समस्याएं चुनौती बनकर खड़ी हैं। जनसंख्या–विस्फोट उनमें से सर्वाधिक बड़ी चुनौती है। सवा अरब भारतीयों के पास धरती, खनिज, साधन आज भी वही हैं जो पचास साल पहले थे। परिणामस्वरूप लोगों के पास जमीन कम, आय कम और समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। जनसंख्या वृद्धि के साथ, भारत को सामाजिक, आर्थिक, और पर्यावरणीय मुद्दों का सामना करना है, जैसे कि रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, और प्रदूषण। भारत की जनसंख्या वृद्धि और नियंत्रण के साथ आने वाले प्रभावों को प्रबंधन करने के लिए सरकारी और सामाजिक प्रयास जारी हैं, ताकि समृद्धि और सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

जनसंख्या में वृद्धि होने के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों पर भार और बढ़ जाएगा। जनसंख्या दबाव के कारण कृषि के लिए व्यक्ति को भूमि कम उपलब्ध होगी जिससे खाद्यान्न और पेयजल की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

इसके अलावा लाखों लोग चिकित्सा–सुविधा और शिक्षा के लाभों तथा समाज के उत्पादक सदस्य होने के अवसर से वंचित हो जाएंगे। पचास करोड़ से अधिक भारतीय पच्चीस वर्ष से कम आयु के हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण खाद्यान्न समस्या का सबसे अधिक सामना विकासशील देश कर रहे हैं। सवा अरब आबादी वाले भारत जैसे देश में, जहां सरकारी आकलनों के अनुसार 32 करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं, हालत अत्यंत शोचनीय है। जिस गति से जनसंख्या दर में वृद्धि हो रही है उस गति से उत्पादन बढ़ा पाना संभव नहीं है। इसलिए अर्थशास्त्रियों की सोच है कि अनावश्यक आबादी न बढ़ने दें। भारत में आबादी बढ़ने का मुख्य कारण है जन्म–दर का मृत्यु–दर से अधिक होना। हमने मृत्यु–दर को तो सफलतापूर्वक कम कर दिया है, पर यही बात जन्म–दर के बारे में नहीं कही जा सकती। विभिन्न जनसंख्या नीतियों और अन्य उपायों से प्रजनन दर पहले की तुलना में कम तो हुई है, पर यह दूसरे देशों के मुकाबले अब भी बहुत अधिक है। इसी कारण देश की आबादी बढ़ती जा रही है। विश्व के कृषि भू–भाग का मात्र ढाई प्रतिशत भारत में है, जबकि यहां की आबादी दुनिया की कुल आबादी के सत्रह फीसदी के करीब है।

विश्व में सबसे पहले 1952 में आधिकारिक रूप से जनसंख्या नियंत्रण के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनाया गया। मगर लाख कोशिशों के बाद भी हम अपना घोषित लक्ष्य हासिल नहीं कर पाए। जनसंख्या में वृद्धि होने के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों पर भार और बढ़ गया। जनसंख्या–वृद्धि के कारण कृषि के लिए व्यक्ति को भूमि कम उपलब्ध होगी, जिससे खाद्यान्न व पेयजल की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इसके अलावा लाखों लोग स्वास्थ्य सुविधाओं तथा अच्छी शिक्षा और बेहतर आय के अवसरों से वंचित रह जाएंगे।

कुछ दशकों से जनसंख्या वृद्धि एक नई चुनौती बनकर हमारे सामने आई और आज भी इस पर काबू पाने में सरकार को कठिनाई हो रही है। जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम देश को भोगने पड़ रहे हैं। अधिक जनसंख्या के कारण बेरोजगारी की विकराल समस्या उत्पन्न हो गई है। लोगों के आवास के लिए कृषियोग्य भूमि और जंगलों को उजाड़ा जा रहा है। हरियाली कम होती जा रही है। चरागाह बहुत तेजी से रिहाइशी कॉलोनियों की भेंट चढ़ते गए हैं। भूजल के अंधाधुंध दोहन का दबाव बढ़ता जा रहा है और इसके चलते देश के कई इलाके 'डार्क जोन' में बदल गए हैं, यानी कितनी भी गहरी खुदाई की जाए वहां से पानी नहीं निकाला जा सकता। यदि जनसंख्या विस्फोट यों ही होता रहा तो बहुत–से लोगों के समक्ष जीने के बुनियादी संसाधनों का संकट खड़ा हो जाएगा।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

दिनभर काम करने के बाद मजदूर परिवार रात में सड़क किनारे खुले में सोने को मजबूर

झारखंड, यूपी व एमपी से आये मजदूर परिवारों ने जैसलमेर में रेलवे स्टेशन रोड के किनारे बनाया बसेरा

- **इन मजदूर परिवारों को रात गुजारने के लिए रोड के किनारे झोपड़े बनाकर रहना पड़ रहा है**
- **जैसलमेर में करीब 150 से अधिक परिवार बाहर से आकर यहां मजदूरी का काम करते हैं**
- **पिछले दो वर्ष में मजदूरों के लिए रातें दर्दनाक साबित हो चुकी है**
- **दो अलग-अलग हादसों में 3 युवक जान गंवा चुके हैं। वहीं तीन मासूमों सहित 5 लोग घायल हो चुके हैं**

जैसलमेर, (नि.सं.)। जैसलमेर के शहरी क्षेत्र में रहवासियों की आय बेतहाशा बढ़ने से गली–गली में आलीशान बिल्डिंगें बनाने वाले मालिकों को मजदूर नहीं मिलने के कारण झारखंड, यूपी व एमपी के मजदूर परिवार जैसलमेर आकर कमठे का कार्य पांच सौ रूपए दिन में करने लगे हैं। इन मजदूर परिवारों को रात गुजारने के लिए स्थानीय रेलवे स्टेशन की बाउंड्री के आगे और जैसलमेर–जोधपुर रोड के किनारे झोपड़े बनाकर रहना पड़ रहा है।

घर से हजारों किमी दूर रोजी रोटी की जुगाड़ में जैसलमेर आने वाले मजदूर परिवारों को यहां छत भी नसीब नहीं होती है। ये परिवार दिनभर मजदूरी करने के बाद रात में सड़क किनारे खुले में सोने को मजबूर है। शहर के गड़ीसर चौराहा से लेकर रेलवे स्टेशन तक सड़क किनारे करीब 150 से ज्यादा परिवार खुले आसमान के नीचे डेरा जमाए है। पिछले दो वर्ष में मजदूरों के लिए रातें दर्दनाक साबित हो चुकी है। दो अलग–अलग हादसों में 3 युवक जान गंवा चुके हैं। वहीं तीन मासूमों सहित 5 लोग गंभीर घायल हो चुके है। हादसों के बाद जिला प्रशासन व नगर परिषद की नींद खुलती है। एक दो दिन कार्रवाई करते हुए मजदूरों को यहां से खदेड़ दूसरी जगह शिफ्ट किया जाता है। लेकिन उसके कुछ दिन बाद फिर से मजदूर यहां आकर रहने लग जाते हैं। पूर्व में इस प्रकार की घटनाएं होने के बावजूद भी नगर परिषद व जिला प्रशासन कोई सबक नहीं ले रहा है।

काफी समय से ये लोग सड़क किनारे रह रहे हैं। इन्हें हटाने के लिए कभी कोई प्रयास नहीं किया गया। इस तरह की घटनाओं से सबक नहीं लेकर सुरक्षित जगह शिफ्ट करना किसकी जिम्मेदारी है? शहर से कुछ दूरी पर कई जगहें खाली पड़ी है, सड़क से बहुत अंदर की तरफ एक स्थान चिह्नित कर इन्हें वहां रखा जा सकता है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ये मजदूर परिवार बिना छत के पार्कों में, फुटपाथ पर व सड़क किनारे रह रहे हैं। इतना ही नहीं यह सबको पता है कि ये खुले आसमान में रहते हैं तभी तो राजनीतिक पार्टियां, प्रभावशाली लोग व नगरपरिषद सर्दी के समय इन्हें कंबल आदि बांटने इन्हीं जगहों पर जाते हैं। फिर भी इस खतरे से अनजान किसी ने कोई कदम नहीं उठाया। जैसलमेर में करीब 150 से अधिक परिवार बाहर से आकर यहां मजदूरी का काम करते हैं। जैसलमेर में झारखण्ड के अलावा मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश से कई परिवार मजदूरी के लिए आते हैं। कुछ परिवारों को अविकसित पार्कों में जगह मिल गई तो वहां उन्होंने अपना निवास बना लिया, तो कुछ ने सड़क के किनारे ही डेरा जमा लिया। दिन भर मजदूरी की तलाश में रहते हैं और मजदूरी मिलने पर ही शाम को परिवार के लिए रोटी का इंतजाम हो पाता है। सड़क किनारे रहना इनकी मजबूरी है। शहर में केवल तीन रेन बसेरे हैं जहां इन्हें एंट्री नहीं है, क्योंकि ये लोग ग्रुप में आते हैं और दो चार परिवार साथ में रहते हैं। इनका कुछ महीनों के लिए यहीं अस्थाई निवास हो जाता है। इसलिए रेन बसेरे में इन्हें एंट्री नहीं मिलती। रेन बसेरे भी इनके लिए पर्याप्त नहीं है। इसी वजह से नगरपरिषद के रेन बसेरों में इन्हें जगह नहीं मिलती है। हादसों के बाद दो चार दिन के लिए इन्हें रेन बसेरों में शिफ्ट किया जाता रहा है। लेकिन कुछ दिन बाद मजदूर रेन बसेरों से वापिस बाहर आ जाते है।

आयुक्त, नगर परिषद लजपालसिंह सोढ़ा ने बताया कि रेलवे स्टेशन के आगे सड़क किनारे रहने वाले परिवारों को पूर्व में भी दूसरी जगह शिफ्ट किया गया था। लेकिन यह वहां से वापिस आ जाते है। इनकों अब पुराने केंद्रीय बस स्टैंड में शिफ्ट किया जाएगा। एक दो दिन में होमगार्ड के जवान तैनात करवाकर शिफ्ट करने की कार्रवाई की जाएगी।

दिव्यांग छात्रों ने हिमाचल के पहाड़ पर 101 फीट का तिरंगा लहराया

छात्रों ने पतासलु हिल्स पर तिरंगा लहराकर जोधपुर का नाम रोशन किया है

- **इन दिव्यांगों ने बैसाखी से चलकर विशाल पर्वत पर तिरंगा लहराया है**
- **विकलांग शिक्षक सेवा संस्थान स्थित दिव्यांग छात्रावास के छात्र 17 अक्टूबर को रवाना हुए थे**

जोधपुर, (कासं)। विकलांग शिक्षक संस्थान की ओर से छात्रों ने हिमाचल की मनाली स्थित पतासलु हिल्स पर पहुंचकर 101 फीट का तिरंगा लहराया कर जोधपुर का नाम रोशन किया है। यह माउंटेन या हिल्स 14 हजार फीट की ऊंचाई पर है। प्रथम पुलिया चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित विकलांग शिक्षक सेवा संस्थान स्थित दिव्यांग छात्रावास के छात्र 17 अक्टूबर को रवाना हुए थे। वे हिमाचल में मनाली स्थित पतासलु माउंटेन पर पहुंचे जिसकी ऊंचाई लगभग 14000 फीट है, वहां उन्होंने भारत का 101 फीट का तिरंगा लहराया।

मिशन 101 आज सफल हुआ तो दिव्यांगों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। 14000 फीट पहुंच कर अपना जोश दिखाया। भारत का तिरंगा पतासलु चोटी पर सभी दिव्यांगों ने जोश से भारत माता की जय जय कार से गूंजा दिया।

संस्थान के अध्यक्ष जवान बन गोस्वामी व उपाध्यक्ष अक्षय गौड, प्रहलाद राम तिवरी, महेंद्र रायका, जितेंद्र सिंह, नरपत राम, ईशाक खान, गणेशाराम, जगदीश राजपुरोहित, रामनिवास इन सभी दिव्यांगों ने राष्ट्रगान के साथ एक साथ खड़े होकर राष्ट्रीय ध्वज लहराया और भारत के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जिनमें छात्रों के दोनों पांव या एक पांव नहीं है। इन दिव्यांगों ने बैसाखी से चलकर विशाल पर्वत पर 101 फीट का तिरंगा लहराया और लिम्का बुक रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करवाएंगे।

दिव्यांगों को यह अवसर जयपुर स्थित कंपनी 14 माउंटेन एडवेंचर के डायरेक्टर सोहन तंवर के नेतृत्व में प्रदान किया गया। सस्थान के निर्देशक विजय सिंह मेड़तिया ने बताया कि इन दिव्यांगों को गाइड करने के लिए खीमीराम, शेर सिंह, दुष्यंत गहलोत आदि ने सहयोग प्रदान किया।

पोकरण में रावण के पुतले का दहन नहीं हुआ

पोकरण, (निसं)। दशहरा के दिन रावण दहन का नजारा पोकरण शहर की जनता को मंगलवार को देखने को नहीं मिला। नगरपालिका प्रशासन द्वारा दशहरा के दिन रावण दहन कार्यक्रम को लेकर निविदा प्रक्रिया में वर्क आर्डर देने की तारीख के दिन अच्छा संहिता लगने के कारण पालिका प्रशासन द्वारा वर्क आर्डर नहीं दिया जा सका। वहीं शहर एवं आस–पड़ौस के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को हर वर्ष की भांति रावण दहन कार्यक्रम एवं आकर्षक आतिशबाजी का नजारा देखने को नहीं मिला।

हिंदुओं के सबसे बड़े त्योहारों में एक विजयादशमी के दिन शहर के लोग राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान में रावण दहन का मेला देखने आए तो सही, लेकिन उन्हें यहां आने के बाद हताशा ही हाथ लगी। जिसका कारण नगरपालिका प्रशासन की उदासीनता है।

जानकारी अनुसार इस साल नगर पालिका के प्रशासन ने आचार संहिता से पहले रावण दहन की ऑनलाइन निविदा निकल गई थी। वही निविदा को खोलने एवं कार्य करने की तारीख 9 अक्टूबर को सुबह लगभग 12 बजे आचार संहिता की घोषणा हो गई। वहीं वर्कआर्डर दोपहर 2 बजे देना था, जो कि नियमानुसार आचार संहिता लगने के बाद वर्कआर्डर नहीं दिया जा सकता। जिसके चलते पालिका प्रशासन इस बार विजयदशमी के पर्व पर रावण दहन कार्यक्रम आम जनता को देखने को नहीं मिला। अधिकारियों को आचार संहिता के नियमों का पता नही था और आचार संहिता के बाद अतिरिक्त जिला कलेक्टर को रावण दहन की अनुमति मांगने पर उन्होंने इसे सिरे से खारिज कर दिया। लोगों तक इस साल रावण दहन में नगरपालिका के द्वारा अनुमति मांगने में हुई चूक की जानकारी नहीं थी। जिसके कारण शाम के वक्त आस पास के गांव सहित शहर के कई लोग हर साल की भांति इस साल भी रावण दहन देखने पहुंच गए। बाद में उन्हें पता चला कि इस बार रावण दहन नहीं हो रहा है, तो वे वापस लौट गये।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 25 अक्टूबर, 2023

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, शतभिषा नक्षत्र दिन 1:30 तक, वृद्धि योग दिन 12:17 तक, विष्टि करण दिन 12:33 तक, चन्द्रमा गुरूवार प्रातः 5:38 पर मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–तुला, चन्द्रमा–कुम्भ, मंगल–तुला, बुध–तुला, गुरू–मेष, शुक्र–सिंह, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज पापाकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:23 तक, शुभ 10:47 से 12:11 तक, चर 2:59 से 4:22 तक, लाभ 4:22 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:35, सूर्यास्त 5:46

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

कर्क

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन में बना हुआ भय समाप्त होगा। दिनचर्या में सुधार होगा। आर्थिक परेशानियां दूर होने लगेंगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

तुला

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच–विचार होगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृश्चिक

घर–परिवार के कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

धनु

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा।

कुंभ

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।